M.A. - IV^th Semester

Paper - IV^th

Subject - Sociology

Topic - Criminology -
(अपराधशास्त्र की व्याख्या, अपराधियों - का वर्गीकरण, अपराध की रोकथाम के उपाय)

Lecture By -

Dr. Pooja Tiwari
Assistant Professor,
(H.O.D.)
Department of Sociology.
Nehru Gram Bharati
(Deemed tobe)
University
Prayagraj.

Scanned with CamScanner

अपराधशास्त्र की व्याख्या -

अपराध को सामाजिक विघटन का महत्वपूर्ण स्वरूप माना जाता है। प्रत्येक समाज में अपराध और अपराधी पाये जाते हैं। अपराध की समाजशास्त्रीय व्याख्या अति प्राचीन है।

अपराध वह व्यवहार है जिसमें सामाजिक मूल्यों की अवहेलना होती है और कानून का उल्लंघन होता है। अतः अपराध सामाजिक और कानूनी दोनों रूप में होता है।

मावरर के अनुसार ↴

"अपराध सामाजिक मानदण्डों का उल्लंघन है।"

सेथना के अनुसार ↴

"अपराध वह कार्य या त्रुटि है, जिसके लिए - कानून दण्ड देता है।"

हैकरवाल के अनुसार ↴

"अपराध कानून का उल्लंघन है।"

इलियट मैरिल के अनुसार ↴

"अपराध को सामाजिक नियमों का उल्लंघन माना गया है।"

Scanned with CamScanner

अपराधियों का वर्गीकरण -

(1) लोम्ब्रोसो (1836 से 1909), इटैलियन अपराधशास्त्री, जिन्हें अपराध शास्त्र का जनक माना जाता है, का मानना है "अपराधी जन्मजात होते हैं उन्हें बनाया नहीं जाता" (Criminals are born). उनके इस सिद्धांत को 'पूर्वजानुरूप (पूर्वजों से मिला हुआ) सिद्धांत' (Atavastic Theory) कहते हैं। लोम्ब्रोसो ने दो महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की —

(i) Crime: Its Cause and Remedies
(ii) The Criminal man

लोम्ब्रोसो अपराधी के चार प्रकार बताते हैं —

(i) जन्मजात अपराधी (Born criminal)
(ii) पागल अपराधी (Insane criminal)
(iii) आवेग युक्त अपराधी (Criminal by Passion)
(iv) आकस्मिक अपराधी (Occasional Criminal)

(2) सदरलैण्ड (1883-1950), अमेरिकी अपराध शास्त्री जिन्हें आधुनिक अपराध शास्त्र का जनक माना जाता है, जिनका मानना है कि —
"अपराध एक सीखा हुआ व्यवहार है न कि जन्मजात।"
(Crime is a Learned behaviour) सदरलैण्ड के शब्दों में —

सदरलैण्ड की महत्वपूर्ण पुस्तकें -
(1) Crime and Business
(2) Principles of Criminology (1924)
(3) The Professional Thief (1939)
(4) White collar crime (1949).

Scanned with CamScanner

अपराध के रोकथाम के उपाय —

समाज में अपराध रोकने के दो प्रकार पाए जाते हैं।
(i) प्रतिरोधात्मक नियम तथा (ii) निषेधात्मक नियम।

(i) प्रतिरोधात्मक नियम → 'जैसे को तैसे' के विचार पर आधारित है। यह अपराध के बदले अपराध के नियम पर आधारित है। दुर्खीम द्वारा शांतिक समाज के अन्तर्गत 'दमनात्मक कानून' इसी श्रेणी में आता है।

(ii) निषेधात्मक नियम → यह नियम अपराध को रोकने के लिए सुधार पर अधिक जोर देता है। वर्तमान समय में निषेधात्मक कानून का बोलबाला है। जिसका मुख्य जोर व्यक्ति को अपराध करने से रोकता है। जेल प्रणाली, परिवीक्षा, पैरोल तथा उत्तर संरक्षण सेवाएं आदि के माध्यम से इस दिशा में विशेष प्रयत्न किए जा रहे हैं।

Scanned with CamScanner